AHIMSA PARMO DHARMA

Department of Posts has been conducting stamp design competitions/ photography competitions on various themes since 2015 at the national level. Based on the entries received from participants, stamps are designed and released. Selected participants are given cash awards. This time, a nationwide stamp design competition on the theme "Ahimsa Parmo Dharma" was conducted. The theme was chosen in consonance with the 150th Birth Anniversary celebrations of the Father of our Nation, Mahatma Gandhi. The competition elicited tremendous response and the Department is thankful to all participants who have made this competition successful.

Entries from participants were invited in two categories of age groups of (i) upto 18 years and (ii) above 18 years. Philatelic items viz. Stamps & Miniature Sheet have been designed on the basis of selected entries. The first three winners in the first category ie. upto 18 years are Ms. Prachi, Master Vikash, Master Sukdev Roy. Five consolation winners are Master Tushar, Master Rajtanu Dasgupta, Master Vaibhav Maurya, Master Hemant Kumar, Master Sujit Kumar. The first three winners in the second category i.e. above 18 years are Sh. Purushottam J. Pawar, Sh. Ravindra Somanath, Sh. P. Mutharas. Five consolation prize winners are Ms. Swarda Deshmukh, Sh. Suraj Kumar Palo, Sh. Prashant A. Maru, Sh. Suresh Kumar Maharana, Sh. Amit Singh Kushwaha.

Ahimsa Parmo Dharma is the philosophy of life that was followed by the Father of our Nation, Mahatma Gandhi. The preaching of Gandhiji and his principles of life are a way of living for many people. Non-Violence is the philosophy of life advocated by Gandhiji during the struggle for freedom wherein he revolted against the British through Satyagraha. After the British took over the rule in India, their cruelty towards Indian natives knew no bounds. They took over our land and other resources. Many other freedom fighters had a revolutionary ideology of protesting against the British rule. Gandhiji was not in favour of violence and believed that Ahimsa or peaceful non-violence is the best way to register protest against violence and injustice.

Ahimsa essentially means not to hurt anyone physically. Himsa advocates reaching one's goals even if it is through the means of violence. In today's day and age of cut-throat competition, many youngsters forget that it is important not to hurt anyone along the way. Even when we speak about terrorism and anti-national activities, himsa is the root cause. Its results are never good. War has only destroyed humanity and the beauty of life. It gives no value to peaceful co-existence but paves the way for hatred and blood-shed.

The Father of our Nation, Mahatma Gandhi sincerely believed that non-violence or ahimsa is the strongest force of mankind and that it could even turn a demon into a saint, after all this body of ours is the temple of living gods. His methods of protesting against the British advocated non-violence. He emphasised on Satyagraha as the method of protest for seeking the truth and fought for the cause of the peasants of Champaran, who were exploited by their landlords. Dandi March which was a rebellion against taxes imposed on the basic necessity, salt, was again a peaceful method of protest promoted by Gandhiji who wanted the tax imposed on salt to be removed. To this end, he and 78 Indians took off to Dandi in March 1930 on foot, to extract salt from the sea, which was illegal at that time.

Gandhiji also revolted through Non-cooperation Movement in which the Indian workers refused to work but did not resort to any violent means of protest. Further, Indian citizens refused to work in British institutions. Lawyers, clerks, doctors, factory workers, merchants, etc. refused to work and students revolted against studying in British colleges and schools. This movement was later promoted by burning foreign cloth and other foreign goods and taking over wearing Khadi, an Indian-spun, handwoven cloth. Even though this movement lasted only a short while, it shook the British. In fact, it placed them in a damned-if-you-do and damned-if-you-don't-dilemma. Such was the power of non-violent Satyagraha.

Gandhiji, even now, inspires many people to follow his path of Non-Violence. In fact, he has inspired several civil rights and independence movements across the world. He is truly known as the apostle of peace and non-violence.

Department of Posts is proud to issue a set of two Commemorative Postage Stamps on Ahimsa Parmo Dharma, as a tribute to Mahatma Gandhi during his 150th birth anniversary celebrations. The date of issue ie. 17.06.2019 is based on the date of establishment of Sabarmati Ashram (ie. 17.06.1917). The First Day Cover & Brochure depict Warli Art that adorns the walls of the Ashram.

Credits:

Stamps/Miniature Sheet/FDC/ Brochure/ Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta, based on selected entries received from participants
Text	:	Ms. Shaili Dhagat

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India

अहिंसा परमो धर्मः
AHIMSA PARMO DHARMA

अहिंसा परमो धर्मः

डाक विभाग, वर्ष 2015 से विभिन्न विषयों पर राष्ट्रीय स्तर की डाक–टिकट डिजाइन प्रतियोगिताओं/फोटोग्राफी प्रतियोगिताओं का आयोजन करता रहा है। इन प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों से प्राप्त प्रविष्टियों के आधार पर डाक–टिकट डिजाइन और जारी किए जाते हैं। साथ ही,चयनित प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। इस बार "अहिंसा परमो धर्मः" विषय पर राष्ट्रव्यापी डाक–टिकट डिजाइन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस विषय–वस्तु का चयन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 150वें जयंती समारोह को ध्यान में रखते हुए किया गया। इस प्रतियोगिता के लिए बड़ी संख्या में प्रविष्टियां प्राप्त हुई। डाक विभाग,सभी प्रतिभागियों का आभारी है, जिन्होंने इस प्रतियोगिता को सफल बनाया।

प्रतियोगिता के लिए दो आयु वर्ग के प्रतिभागियों से प्रविष्टियां आमंत्रित की गई थीं : –(I) 18 वर्ष तक तथा (II) 18 वर्ष से अधिक। चयनित प्रविष्टियों के आधार पर डाक टिकट एवं मिनियेचर शीट का डिजाइन तैयार किया गया है। प्रथम श्रेणी अर्थात् 18 वर्ष तक के आयु वर्ग में प्रथम तीन विजेता सुश्री प्राची, मास्टर विकास और मास्टर सुकदेव रॉय है। इस प्रतियोगिता के पांच सांत्वना पुरस्कार विजेता मास्टर तुषार, मास्टर राजतनु दासगुप्ता, मास्टर वैभव मौर्य, मास्टर हेमन्त कुमार और मास्टर सुजीत कुमार हैं। इस प्रतियोगिता की दूसरी श्रेणी अर्थात् 18 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में प्रथम तीन विजेता श्री पुरुषोत्तम जे. पवार, श्री रवीन्द्र सोमनाथ और श्री पी. मुथारस तथा पांच सांत्वना पुरस्कार विजेता सुश्री स्वरदा देशमुख, श्री सूरज कुमार पालो, श्री प्रशांत ए. मारू, श्री सुरेश कुमार महाराणा और श्री अमित सिंह कुशवाहा हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, अहिंसा परमो धर्मः के जीवन दर्शन पर सदा अडिग रहे। गांधीजी के उपदेश और उनके सिद्धांत अनेक लोगों के लिए जीवन का मूलमंत्र हैं। अहिंसा के मार्ग पर चलकर जीवन जीने का नजरिया गांधीजी ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान प्रतिपादित किया, जब उन्होंने सत्याग्रह, दांडी मार्च और असहयोग आंदोलन के जरिए ब्रिटिश हुकूमत से लोहा लिया। भारत पर कब्जा जमाने के बाद यहां के लोगों के प्रति अंग्रेजों के जुल्म की कोई सीमा नहीं थी। अंग्रेजों ने यहां की भूमि और समस्त संसाधनों को नियंत्रित कर लिया। कई स्वतंत्रता सेनानियों ने ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध क्रांति का रास्ता अपनाया। परंतु, गांधीजी हिंसा के पक्ष में नहीं थे। उनका मानना था कि हिंसा और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने का सबसे प्रभावी रास्ता अहिंसा और शांतिपूर्ण प्रदर्शन का है।

अहिंसा का तात्पर्य दूसरों को शारीरिक क्षति नहीं पहुंचाने से है। हिंसा का कार्य ठीक इसके विपरीत है, जिस पर चलने वाले अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए दूसरों को क्षति पहुंचाने से भी हिचकते नहीं हैं। दुर्भाग्यवश कड़ी प्रतिस्पर्धा के आज के दौर में अनेक युवा ये भूल जाते हैं कि सबसे महत्वपूर्ण यह है कि हम किसी को चोट न पहुंचाएं। आतंकवाद और राष्ट्रविरोधी गतिविधियों की जड़ में भी हिंसा ही है। इसके परिणाम कभी सकारात्मक नहीं हो सकते। युद्ध ने मानवता और जीवन के सौंदर्य को सदा नष्ट ही किया है। इसने सिर्फ नफरत और खून–खराबे को जन्म दिया है। इसमें शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के लिए कोई जगह नहीं है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का दृढ़ विश्वास था कि अहिंसा मानव जीवन की वह प्रबल शक्ति है, जो शैतान को भी संत बना सकती है, क्योंकि मानव के इसी शरीर में ईश्वर का वास है। अंग्रेजों के विरुद्ध अपने संघर्ष में गांधी जी ने सदा अहिंसा का मार्ग अपनाया। उन्होंने सत्याग्रह पर बल दिया और चंपारण के खेतिहर मजदूरों के हक की लड़ाई लड़ी,जो जमींदारों द्वारा शोषित थे। जीवन की बुनियादी जरुरत अर्थात् नमक पर अंग्रेजों द्वारा कर लगाए जाने के विरोध में निकाले गए विशाल दांडी मार्च में भी गांधीजी ने शांतिपूर्ण प्रदर्शन का ही रास्ता अपनाया, ताकि इस अन्यायपूर्ण कर को समाप्त किया जा सके। अपने दृढ़ संकल्प को सिद्ध करने के लिए समुद्र तट पर नमक बनाने के उद्देश्य से महात्मा गांधीजी मार्च 1930 में 78 अन्य साथियों के साथ पैदल ही दांडी की ओर रवाना हुए। इस प्रकार नमक तैयार करना उस समय कानून के खिलाफ था।

गांधीजी ने असहयोग आंदोलन के माध्यम से भी विद्रोह किया, जिसमें भारतीय कामगारों ने काम करने से इनकार तो किया, पर उन्होंने हिंसा का मार्ग नहीं अपनाया। इसके अलावा, भारतीयों ने ब्रिटिश संस्थाओं में भी कार्य करने से इनकार कर दिया। वकीलों, क्लर्कों, डॉक्टरों, फैक्ट्री कार्मिकों, व्यापारियों आदि सभी ने इस विद्रोह में भाग लिया और यहां तक कि छात्रों ने भी ब्रिटिश कॉलेजों और स्कूलों में न पढ़ने जाने का फैसला किया। इस आंदोलन को उस समय और अधिक बल मिला, जब लोगों ने ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा बनाए गए कपड़ों और विलायती सामानों का बहिष्कार कर उन्हें आग के हवाले कर दिया और हाथ से काते सूत से तैयार स्वदेशी खादी को अपना लिया। हालांकि यह आंदोलन बहुत थोड़े समय के लिए चला, पर इसने ब्रिटिश हुकूमत की जड़ें हिला दीं। अंग्रेजों पर इसका प्रभाव इतना गहरा था कि इसके बाद वे क्या करें, क्या न करें के असमंजस में पड़ गए। यह अहिंसावादी सत्याग्रह की ताकत थी।

आज भी गांधीजी के आदर्श अनेकानेक लोगों को अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। उनकी विचारधारा ने विश्वभर में अनेक नागरिक अधिकार और स्वतंत्रता आंदोलनों को जन्म दिया है। गांधीजी को सही मायनों में शांति और अहिंसा की मूर्ति कहा जाता है।

डाक विभाग, महात्मा गांधी की 150वीं जयंती समारोह के दौरान उनके प्रति श्रद्धांजलि स्वरूप अहिंसा परमो धर्मः विषय पर दो स्मारक डाक–टिकटों का सेट जारी करते हुए गर्व का अनुभव करता है। इन डाक टिकटों को साबरमती आश्रम की स्थापना तिथि (17.06.1917) को ध्यान में रखते हुए 17.06.2019 को जारी किया जा रहा है। प्रथम दिवस आवरण और विवरणिका पर इस आश्रम की दीवारों पर उकेरी गयी वर्ली कला को दर्शाया गया है।

आभार :

डाक–टिकट/मिनियेचर शीट/
प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/ : श्रीमती नीनू गुप्ता , प्रतिभागियों से
विरूपण कैशे प्राप्त चयनित प्रविष्टियों के आधार पर
पाठ : सुश्री शैली धागत

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्य वर्ग	: 1500 पैसा (2)
Denomination	: 1500 p (2)
मुद्रित डाक-टिकटें	: 500000 प्रत्येक
Stamps Printed	: 500000 each
मुद्रित मिनियेचर शीट्स	: 110000
Miniature sheets printed	: 110000
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नाशिक
Printer	: India Security Press, Nashik

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्यः ₹ 5.00